'पिता ने मां पर गर्म तेल फेंका, मारपीट में कान तक फट गया...' बेटे की बात सुन आचार्य प्रशांत ने जो कहा वो सबको सुनना चाहिए

कुछ बच्चों का बचपन खुशियों में नहीं, बल्कि डर और घरेलू हिंसा के बीच गुजरता है। उन्हें माता-पिता का प्यार और सुकून नहीं, बल्कि रोज के झगड़े और तनाव देखने को मिलते हैं। ऐसा ही एक मामला हाल ही में लेखक आचार्य प्रशांत के सामने आया। बेटे की बात सुनने के बाद उन्होंने सवाल उठाया कि आखिर घरवाले यह सब क्यों सहते हैं।

Authored By: नंदिनी दुबे
Updated: 21 May 2026, 11:05 am IST | नवभारतटाइम्स.कॉम

Advertisement

NBT को सिलेक्ट कर

अगर घर में रोज डर और मारपीट का माहौल हो, तो उसका सबसे ज्यादा बुरा असर बच्चों के मन पर पड़ता है। हाल ही में ऐसा ही एक मामला हाल ही में मशहूर लेखक आचार्य प्रशांत के सामने आया, जब एक शख्स ने बताया कि उसके पिता शराब के आदी हैं और उसकी मां के साथ अक्सर मारपीट करते हैं। हालत इतनी खराब हो चुकी थी कि एक बार हिंसा के दौरान उनकी मां का कान तक तोड़ दिया। यह सुनने के बाद आचार्य प्रशांत ने बेटे से सवाल किया कि आखिर वह यह सब क्यों सह रहा है। साथ ही उन्होंने घरेलू हिंसा और सहनशीलता को लेकर कई अहम बातें भी समझाईं। आइए जानते हैं उन्होंने क्या कहा।

पिता ने मां पर गर्म तेल फेंक दिया। Image- Freepik

(सभी तस्वीरें-सांकेतिक हैं)

Advertisement

मां की शादी 16 की उम्र में हो गई

मशहूर लेखक आचार्य प्रशांत के सामने एक बेटे ने अपना दर्द साझा किया। उसने बताया कि उसकी मां की शादी मात्र 16 साल की उम्र में उसके पिता से कर दी गई थी। इसके बाद उसके पिता धीरे-धीरे शराब की लत में पड़ गए। वे सुबह 6 बजे पानी की जगह शराब पीते हैं और रात 2 बजे तक पीते रहते हैं। Image-istock

पिता शराब के आदी हैं और मारपीट करते हैं

बेटे ने आगे बताया कि उसके पिता का व्यवहार समय के साथ और अधिक हिंसक हो गया। एक बार उन्होंने मां पर गर्म तेल से भरी कढ़ाई फेंक दी। वहीं, एक अन्य मारपीट के दौरान कान का झुमका इतनी जोर से खींचा गया कि कान टूट गया और टांके लगाने पड़े। वे बहुत ज्यादा घरेलू हिंसा करते हैं। Image-Istock and Freepik

आखिर यह व्यक्ति इतना पीने के बाद कैसे जिंदा है ?

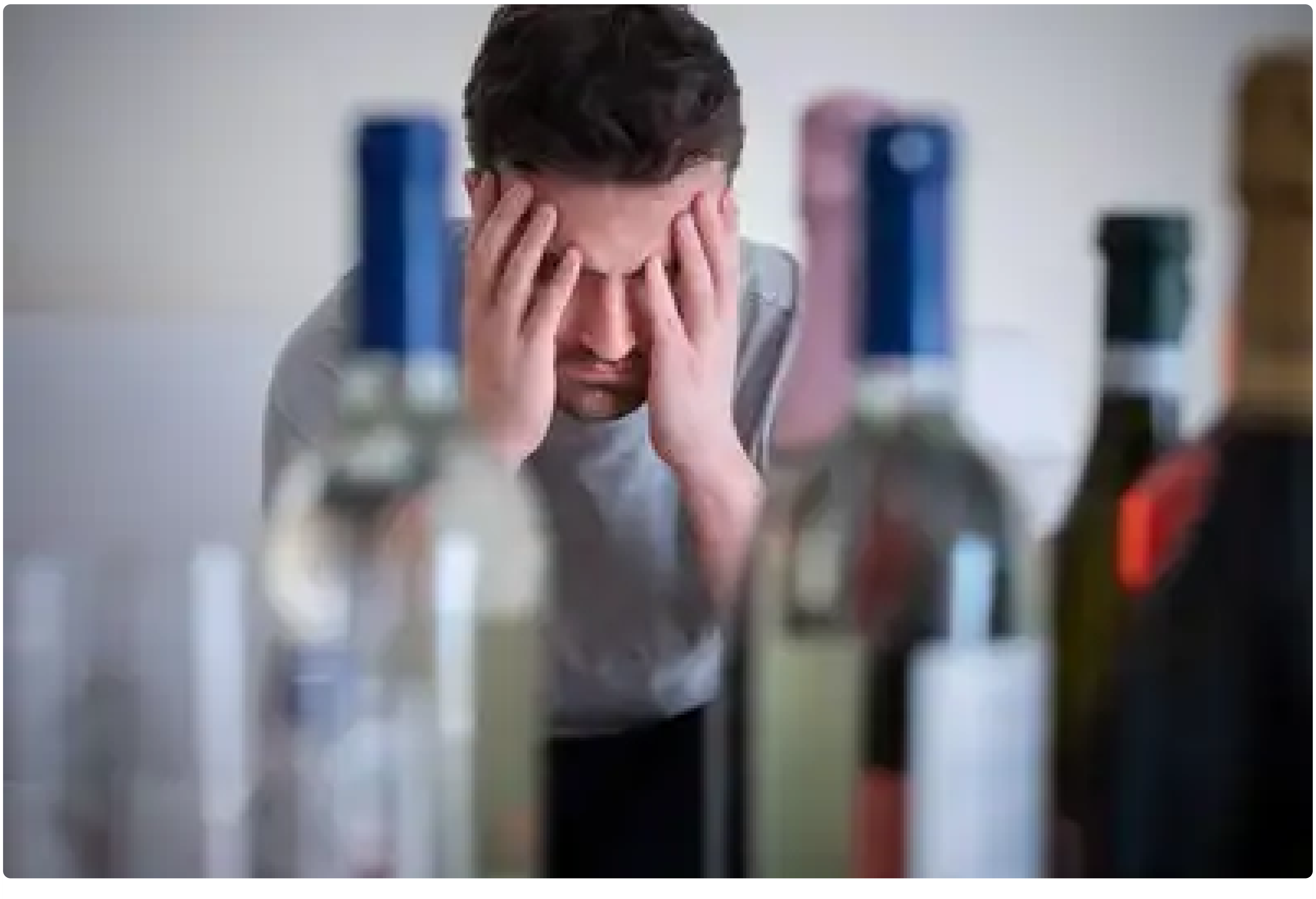

यह सुनने के बाद आचार्य प्रशांत ने कहा कि सुबह 6 बजे से लेकर रात 2 बजे तक. यानी करीब 20 घंटे जो व्यक्ति लगातार शराब का सेवन कर रहा है, उसका लीवर अब तक कैसे ठीक है, यह उनके लिए आश्चर्य की बात है। उन्होंने कहा कि समझ से परे है कि ऐसी स्थिति में भी व्यक्ति अब तक कैसे है। Image-Istock

क्यों करते हैं ऐसे शख्स को सपोर्ट

वह व्यक्ति जिस तरह से शराब पीता रहा और जिस तरह उसे पैसे मिलते रहे, उससे होने वाली उसकी संभावित मौत की जिम्मेदारी आखिर किसकी होगी? उसे झेलकर और उसके प्रति अत्यधिक सहिष्णुता दिखाकर तुम उसके लिए भी नुकसान ही कर रहे हो। इसलिए मैं सबसे यही कह रहा हूं कि जब भी किसी व्यक्ति का घर बर्बाद होता है, उसकी बर्बादी में परिवार वालों का योगदान भी बहुत बड़ा होता है।

Image-Acharya Prashant Facebook

Advertisement

नालायकियां किसी के शय पर ही पनपती हैं

नालायकियां किसी न किसी व्यक्ति के समर्थन पर ही पनपती हैं। महाभारत ऐसे ही तो नहीं हुई थी। दुर्योधन की ओर से कौरवों की पहली दुष्टता क्या थी, वे तो 40 साल से यही कर रहे थे। 5 से 7 साल की उम्र में ही उसने नालायकियां शुरू कर दी थीं। पिता के शय में वह यह सब करता चला गया। वहां पिता की शय थी और यहां पुत्र और पत्नी का समर्थन था है। तुम लोग सहानुभूति दिखाते रहो, दुष्टता को प्रोत्साहित करते रहो।Image-IStock

Advertisement

यहां देखिए पूरा वीडियो

acharya_prashant_ap
Original audio

View profile

View more on Instagram

21,813 likes

acharya_prashant_ap

शराब की लत || आचार्य प्रशांत

पूरा वीडियो यूट्यूब पर : पत्नी और बेटी पर अत्याचार || आचार्य प्रशांत, वेदांत महोत्सव ऋषिकेश में (2022)

गीता मिशन के बारे में अधिक जानने के लिए, नीचे कमेंट में "APgita" टाइप करें।
#acharyaprashant #DomesticViolence #AlcoholAddiction #EndToxicity #WomenSafety

View all 548 comments

00:02 / 05:25

Bengal Bakrid: 'बंगाल में रहना हो तो..', बकरीद पर हुमायूं कबीर के बयान पर मंत्री अग्निमित्रा भड़कीं?

फिर क्यों सहते हो इतना ?

फिर भले ही पति ने मार-मारकर पीठ तोड़ दी हो, लेकिन जरूरी नहीं है कि पति केवल शारीरिक रूप से ही नुकसान पहुंचाए। मानसिक और भावनात्मक स्तर पर भी गहरी चोटें पहुंचाई जाती हैं। ऐसे घाव भी दिए जा सकते हैं जो बहुत गहरे होते हैं। क्यों सहते हैं? सोचो इस बारे में, क्यों सहते हो। Image-Istock

लेखक के बारे में

नंदिनी दुबे

नंदिनी दुबे नवभारतटाइम्स.कॉम में प्रेग्नेंसी और पेरेंटिंग राइटर और प्रिंसिपल डिजिटल कंटेंट प्रड्यूसर हैं। वह दो साल के बच्चे की मां भी हैं, इसलिए प्री-प्रेग्नेंसी से लेकर गर्भावस्था के नौ महीनों की जर्नी और शुरुआती पेरेंटिंग तक के अनुभवों को खुद जी चुकी हैं और जी भी रही हैं। इन अनुभवों ने नंदिनी को इस बात का गहरा एहसास कराया है कि हर महिला की प्री-पोस्ट प्रेग्नेंसी से जुड़ी जरूरतें, देखभाल और पेरेंटिंग से जुड़े तरीके अलग-अलग होते हैं। साथ ही सही और सटीक जानकारी की मौजूदगी की अहमियत भी वह बखूबी समझती हैं। इन्हीं बातों को ध्यान में रखते हुए वह प्रेग्नेंसी एंड पेरेंटिंग में हजारों लेख लिख चुकी हैं, ताकि पाठकों तक भरोसेमंद और मेडिकल गाइडलाइंस के अनुरूप जानकारियां पहुंच सके। मास कम्यूनिकेशन एंड जर्नलिज्म में डिप्लोमा और पत्रकारिता की दुनिया में 1 ... और पढ़ें

लेटेस्ट कमेंट

कमेंट पोस्ट करें